** अध्याय नं.9 **

धूमिल जी के काव्यों का विस्तृत विवेचन के बाद उनके संबंध मे महत्वपूर्ण निष्कर्षों का सहज आकलन किया जा सकता हैं।

आधुनिक बोध तथा नूतन काव्य के सफल कलाकार के रुपमें धूमिल सबसे अलग दिखायी देते हैं। धूमिलजी उन विकासशील कवियों में से है. जिन्होंने किसी वाद विशेष की परिधि में सीमित होकर काव्य की रचना नहीं की है। अपितु आधुनिक हिंदी कविता की विभिन्न धाराओं के बीच परस्पर संबध स्थापित किया है। उन्होंने व्यक्ति तथा समाज को समान महत्व देकर सतुलन स्थापित किया है। इसीकारण धूमिल के काव्य में सामाजिक यथार्थ और मानवतावादी दृष्टि चेतना के साथ मौजूद है।

धूमिल की जीवनी विविधताओं का चलचित्र है। विविध स्थान परिस्थितियाँ एव विविध विचारधाराओं से कवि के व्यक्तित्व का निमाण हुआ है। उनके हृदय में स्नेह की भावना है तो दूसरी ओर विद्रोह की आग। एक ओर त्रस्त ओर उत्पीडित मानवता के प्रति असीम करुणा है तो दूसरी ओर अन्याय ओर शोषण के प्रति आक्रोश। वर्तमान प्रति खीझ तो भविष्य के प्रति आशा ओर विश्वास। उनका व्यक्तित्व कुछ एसे तत्वों से निर्मित हैं, जिसमे कुसुम-सी कोमलता ओर वज्र-की कठोरता हैं।

धूमिल मानव मूल्यों के प्रति आधुनिक कविता को सबसे महत्वपूर्ण विषय मानते हैं। उनकी दृष्टि सभी पक्षों पर है जिनका रास्ता मानवीयता सामाजिक न्याय और नवीन भविष्य की आस्था स होकर है। मानव की प्रतिष्ठा ही उनके काव्य की महत्वपूर्ण विशेषता हैं। धूमिल ने साधारण मध्यवर्गीय मनुष्य को उनकी दुर्बलताओं और सबलताओं के साथ अपन काव्य में प्रस्तुत किया है। उन्होन सामाजिक परिप्रेक्ष्य में ही व्यक्ति के महत्व को स्वीकारा है।

धूमिल के मन में राजनीतिकता से कविता को बचने की भावना विद्यमान है। कविने अपने सामाजिक चतना के साथ-साथ राजनीतिक चेतना के स्वरो को भी प्रधानता दी है। अपन काव्य जीवन में धूमिल ने साम्राज्यवादी शक्तियो के विरोध मे कई कविताएं लिखी। मोचीराम , "पटकथा , "चुनाव" "शांतिपाठ , "राजकमल चौधरी के लिए", शहर मे सूर्यास्त , आदि कविताओं मे वे साम्राज्यवाद के विरोध में खड़े है। धूमिल की राजनीतिक दृष्टि स्वीकार्य हैं जिसमें मानवीयता तथा मानव मंगल के तत्व विद्यमान है।

धूमिल के काव्य की दूसरी विशषता यह है कि उनके काव्य में भाव-बाध ओर यथार्थ के सुंदर चित्र मिलते हैं। शहरी जीवन किन समस्याओं स पीडित हैं और किन परिस्थितिया में अपना जीवन व्यतीत

कर रहा है, उसका चित्र भी धूमिलजी के काव्य में मिलता हैं। मनुष्य का जीवन तनावा चिंता निराशा और खिन्नता से भरा हुआ है। इन स्थिति में किन जीवन मूल्यों को अपनाया जाय यह एक गंभीर समस्या है।

आर्थिक विषमता का चित्रण धूमिल के काव्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता हैं। उनकी कविता में वर्ग वैषम्य का चित्रण बहुत ही मार्मिक हुआ है। सामाजिक विषमता का चित्रण करते हुए धूमिल कहते हैं कि आज के मानव का जीवन त्रिशंकु के के समान हो गया है। सामाजिक विषमता पग-पग पर उसका मार्ग अवरुध्द् कर रही है। समाज में एक ओर उच्चवर्ग के लोण अपार संपत्ति के स्वामी है तो दूसरी ओर निम्नवर्ग तथा मध्यवर्ग के लोग दिन भर संघर्ष करने के बाद भी पेट भरने के लिए दो वक्त की रोटी नहीं पा सकते। उन्हें रोटी के लिए संघर्ष करना पडता हैं। इस अमीरी-गरीबी की विषम चक्की में आज का मानव बुरी तरह से पिस रहा है। उनका जीवन निरुद्देश है और इसका कारण है - हमारी आर्थिक विषमता।

धूमिल के यथार्थ जीवन और जगत् की समस्याओं के साथ इतिहास बोध भी लक्षित होता हैं। यथार्थ की नूतन पृष्ठभूमि पर ऐतिहासिकता और सहज मानवीयता को अपने काव्य का माध्यम बनाया है। आधुनिक युग के मानव को संघर्ष, क्रांति, परस्पर द्वेष तथा तनाव से मुक्त करने के लिए कवि ने ऐतिहासिक महापुरुषों का गौरव-गान भी किया है।

धूमिलजी के काव्य मे प्रणयजनित पीडा का स्वर भी मिलता हैं। जीवन के प्रति तीव्र आसक्ती के कारण उन्होंने केवल सुखद क्षणों की मादक अनुभूतियों को अभिव्यक्ति नहीं दी है अपितु प्रेमजनित पीडा और निराशों को भी शब्दों में बाँधा है।

धूमिल जी काव्य सौंदर्यानुभूति की दृष्टि मे अप्नी अलग विशिष्टता रखती हैं। नारी सौंदर्य चित्रण में कवि की स्थूल और सूक्ष्म दोनों प्रकार की अनुभूतियां अभिव्यत हुई है। देह सौंदर्य क साथ-साय मन सौंदर्य के बिंब भी बडी मात्रा में मिलता हैं।

धूमिल की रचनाओं में वैयक्तिक अनुभूतियां की सहज अभिव्यक्ति हुई है, जिसमें अहंवादी रुप प्रायः उतना नहीं पाया जाता। उन्होंने अपने सुख-दुख दर्द तथा ऐश्वर्य से अधिक समाज के पीडिता की पीडा को मुखरित किया है।

धूमिल के काव्य में राष्ट्र के प्रति सतत जागरुकता दिखायी देती हैं। उनकी राष्ट्रीयता कहीं भारत भूमि के चित्रण में कहीं देश के नेताओं ने दिए गए जागृति के संदेश मे, कहीं धरती के प्रति

कहीं, राष्ट्र की आत्मा बने महापुरुषों के चित्रण में, तो कहीं नवयुवकों को उपलब्ध आजादी की सुरक्षा के लिए निरंतर जागृति के मंत्र देने में अभिव्यक्त हुई है। धूमिल जी के काव्य में विश्वकल्याण और विश्वबंधुत्व की भावना के रंग अधिक दिखायी देते हैं। शोषण, पीडा, अत्याचार, अनाचार के प्रति तीव्र खिन्नता है। वे अपने लेखनी द्वारा प्रत्येक भारतीय मन में उस जोश को भरना चाहते हैं जिससे वे अत्याचारी के सम्मुख कभी न झुके। धूमिल जी के काव्य का मूल स्वर मानवतावादी है। उनके काव्य में मानवमात्र के सर्वांगीण विकास की आकांक्षाओं का चित्रण मिलता है। समाज के दलितो पीडितो शोषितो के प्रति कवि की सच्ची सहानुभूति व्यक्त हुई है। शोषकों के नाश की उन्होंने कामना की है।

धूमिलजी ने वर्तमान समाज की आर्थिक, सामाजिक, विषमताओं और विसगतियांका यथार्थ चित्रण किया है। कवि ने किसानों, मजदूरों और मध्यवर्गीय मानवों की जिंदगी के अभावो, असफलताओ संघर्षों अरेर कुढाओं को उसके असलीयत में चित्रित किया है।

कवि धूमिल ने प्रकृति के विविध रूपों को देखा है। तथा विविध पकार से उसके सोदर्य की सराहना की है। कविने नवीन पाकृतिक दृश्यां की निर्मिती की हे ओर पकृति के पति अपना अनुराग व्यक्त किया है।

भाषा, छंद, मुक्तछंद उपमान प्रतिक और शिल्प विधान को समृध्द करन मे उनका अमूल्य योगदान है। नयी कविता के शिल्प निर्मान करनवाला म उनका स्थान सर्वोच्च है। इनकी भाषाशेली छद योजना, प्रतीक योजना, आदि काफी समृध्द है।

धूमिलजी विविध काव्यरुपां के प्रयागद्वारा भी नयी कविता को बहुत ही समृध्द किया है। उन्होंने परंपरागत काव्यरुपों से लेकर नवीनतम काव्यशेली का प्रयोग किया है। काव्य रुपां के क्षेत्र मे इतनी विविधता शायद ही किसी अन्य नये कवि म मिलती हो।

आधुनिक काव्य भाषा के विकास म धूमिलजी का महत्वपूर्ण यागदान हे। नय भावबोध के अनुरुप उन्होंने भाषा का नया संस्कार किया, नये शब्दां को निर्माण किया साथ ही पुरान शब्दों को नये अर्थ देकर भाषा में नवीन अर्थ भरने का सफल प्रयास किया है। जन-सामान्य की भाषा को काव्यभाषा का नया रुप दे दिया। नवीन बिंब योजना से काव्य चित्रात्मकता की निर्मिति की है। धार्मिक सांस्कृतिक एतिहासिक, प्रतीकों का आश्रय लेकर कम स कम शब्दों में अधिकाधिक अर्थ भर दिया है। लोकोक्ति एवं मुहावरां का प्रयाग धूमलजी न भापिक शक्ति क लिए किया है, जिससे काव्य म कलात्मकता का सुंदर रुप निखर आया हे।

समग्र रुप से यह कहा जा सकता हैं कि, भावानुभूति और शिल्प की दृष्टियोसे धूमिलजी का योगदान नयी कविता के क्षेत्र में अन्यतम है। काव्य वस्तु की दृष्टि से जहाँ उनके काव्य में सहज विकास की अन्त: प्रकिया विद्यमान है वही कला की दृष्टि से चिर नवीनता भी मिलती हैं। संक्षेप में आधुनिक हिंदी काव्यधारा में धूमिलजी का स्थान निर्विवाद रुप से श्रेष्ठ है।